स्नातक खण्ड - 2
हिन्दी प्रतिष्ठा
चतुर्थ पत्र

प्रश्न ⑨ आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी की सौष्ठववादी आलोचना पद्धति का मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

आचार्य पं. नन्ददुलारे वाजपेयी के समीक्षा-सिद्धांत का परिचय दीजिए।

उत्तर एक कहावत है - "नई शराब पुरानी बोतल में नहीं भरनी चाहिए, वह फट जाती है।"

वाजपेयी ने हिन्दी आलोचना में अपने स्वच्छंद विचारों के साथ पदार्पण किया।

वाजपेयी की समीक्षा पद्धति का स्वरूप उनकी रचनाओं में मिलती है - 1) हिन्दी साहित्य 2) आधुनिक साहित्य 3) जयशंकर प्रसाद 4) सूरदास 5) निराला 6) प्रेमचंद

वाजपेयी की समीक्षा शैली व्याख्यात्मक और विवेचनात्मक। उनकी मुख्य विशेषताएँ अग्रलिखित हैं -

1) किसी कृति की विशेषताओं का अध्ययन करते समय वे क्रमानुसार एक, दो, तीन देते हुए उनका वर्णन करते हैं। शुक्लजी की भाँति किसी एक तथ्य को सूत्र रूप में उपस्थित करके उसकी व्याख्या नहीं करते, अपितु तथ्यों को क्रमानुसार वर्णन करते हैं।

(2) व्याख्या में पूर्णता और प्रभावात्मकता की सृष्टि के लिए तुलनात्मक पद्धति का आश्रय भी ग्रहण करते हैं। साकेत की आधुनिकता पर विचार करते हुए उसकी कामायनी, कुरुक्षेत्र और मानस से तुलना करते हैं।

(3) कहीं-कहीं विषय में डूबकर वे भावविभोर भी हो जाते हैं। ऐसे स्थलों पर उनकी आलोचना जीवन की आलोचना का यह स्थल देखिए- अब वह और निराश्रित हो गई, किन्तु शेखर को और बल मिला। संस्कार के लिए, समाधान के लिए, शांति के लिए, नहीं आत्म-प्रवंचना के लिए, विषादवृत्ति के लिए अहं प्रति के लिए।

(4) हास्य व्यंग्य का सन्निवेश वाजपेयी जी की आलोचना-शैली की एक अन्य विशेषता है। कहीं कहीं व्यंग्य में तीखापन भी आ गया है

भाषा- वाजपेयी जी की आलोचनाओं की भाषा संयत व गम्भीर है। डा. नगेन्द्र ने उनकी भाषा और विवेचना अस्पष्टता का आरोप किया है जो अनुचित है। वस्तुतः वाजपेयी की भाषा में भावोद्बोधन की अद्भुत शक्ति है।

उपर्युक्त विवेचना से प्रकट है कि वाजपेयी जी आधुनिक हिन्दी समीक्षको

में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। प्राचीन और नवीन के सहज सामंजस्य को नया रूप, नया जीवन और नई दिशा देने का उन्होंने सराहनीय कार्य किया है। प्राचीनता से उन्हें विरोध नहीं है और न नवीनता के प्रति व्यामोह है। इन दोनों के संयत सम्मिश्रण को उन्होंने साहित्य क्षेत्र में वांछनीय बताया है। आधुनिक काव्य-चेतना के लिए उपर्युक्त भारतीय काव्य-तत्व उन्होंने निःसंकोच ग्रहण किया है और भारतीय समाज के उपर्युक्त पाश्चात्य आदर्शों को भारतीय जामा पहनाने में भी त्रुटि नहीं है।

पीटर और रडीसन की विचारधारा को भी उन्होंने अपनाया तथा भारती काव्यशास्त्र की परम्परागत मान्यताओं को भी अपनीय बनाकर अपनी समीक्षा पद्धति का विकास किया।

—— x ——